प्रेस विज्ञप्ति

उ0प्र0 भूमि सुधार निगम द्वारा ''टिकाऊ खेती'' विषयक कार्यशाला का आयोजन

13 सितंबर 2014 दैनिक जागरण | 9

टिकाऊ खेती पर कार्यशाला आज

- भूमि सुधार निगम की ओर से होगा आयोजन

जागरण संवाददाता, लखनऊ: किसानों को टिकाऊ खेती के बारे में जानकारी देने के लिए उप्र भूमि सुधार निगम की ओर से शुक्रवार को कार्यशाला का आयोजन होगा। गोमतीनगर के इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में सुबह 10 बजे से आयोजित होने वाली कार्यशाला में राजधानी समेत प्रदेश के 29 जिलों से आए किसान, कार्यान्वयन सहायक, उप प्रबंधक और परियोजना प्रबंधक हिस्सा लेंगे। निगम के प्रबंधक मीडिया केबी त्रिवेदी ने बताया कि सोडियम तृतीय परियोजना के तहत 20 इकाइयों के माध्यम से 29 जिलों में कार्य किया जा रहा है। निगम की ओर से स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं को सशक्त करने का भी कार्य किया जा रहा है। बकरी पालन से लेकर लघु व्यवसाय के लिए भी ग्रामीणों को प्रेरित किया जाता है।

कम क्षेत्र में अधिक उत्पादन के लिए विकसित करें तकनीक

जासं, लखनऊ : प्रदेश के लघु एवं सीमांत कृषकों की दशा सुधारने के लिए यह जरूरी है कि उन्हें उत्पादक समूह व उत्पादक संगठन के रूप में संगठित कर ऐसी तकनीक दी जाए, जिससे कम क्षेत्र में भी अधिक उत्पादन हो सके। इससे किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार संभवन हो सकेगा।

इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में उप्र भूमि सुधार निगम द्वारा 'टिकाऊ खेती' पर आयोजित कार्यशाला में यह बात उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद (उपकार) के महानिदेशक प्रो.राजेंद्र कुमार ने कही। उप्र. बीज विकास निगम के प्रबंध निदेशक डॉ. मुकेश गौतम ने कहा कि यदि कृषक उन्नत बीज का प्रयोग करें तो उत्पादकता 15 से 20 प्रतिशत तक बढ़ सकती है। पूर्व कृषि निदेशक डॉ. वी डब्ल्यू अम्बेकर ने बीहड़ में सिंचाई के लिए नलकूप लगाने का सुझाव दिया। उत्तराखंड के आर्गेनिक मिशन सलाहकार राजेश कुमार दुबे ने बताया कि आर्गेनिक खेती प्रति वर्ष 20 फीसद की रफ्तार से बढ़ रही है। यह हमारे स्वास्थ्य, पर्यावरण, टिकाऊ खेती के लिए जरूरी हो गई है। वैज्ञानिकों ने कृषकों द्वारा उठाई गई समस्याओं पर व्यवहारिक सुझाव देते हुए नई कृषि पद्धति अपनाने पर जोर दिया। भूमि सुधार निगम के प्रबंधक एके मिश्रा ने कहा कि कार्यशाला में उठाई गई समस्याओं पर ध्यान दिया जाएगा।

हिन्दुस्तान
तरक्की को चाहिए नया नजरिया
www.livehindustan.com

गिरते खाद्यान्न उत्पादन पर चिंता

लखनऊ। प्रदेश में पिछले दो साल में खाद्यान्न उत्पादन में लगातार हो रही गिरावट अब विशेषज्ञों के लिए गम्भीर चिन्ता का विषय बन गई है। शुक्रवार को भूमि सुधार निगम की ओर ' टिकाऊ खेती' विषय पर आयोजित सेमिनार में विशेषज्ञों ने कहा कि अगर शीघ्र नहीं चेते तो हालात बेकाबू हो जाएंगे।

गेहूं और दलहन के उत्पादन के गिरते ग्राफ पर चर्चा करते हुए विशेषज्ञों ने कहा कि 2011-12 में राज्य में 23.95 लाख टन दलहन का उत्पादन होता था जो वर्ष 2013-14 में घटकर 14.09 लाख टन पर पहुंच गया। हालांकि इस दौरान भूमि सुधार निगम की ओर से प्रदेश की बेकार पड़ी भूमि विशेषकर ऊसर-बंजर को सुधार कर खेती लायक बनाये जाने की प्रशंसा की गई। सेमिनार में डा. मुकेश गौतम, प्रो. राजेन्द्र कुमार, बीडब्ल्यू अम्बेडकर, डा. वीपी सिंह व डा. अजय कृष्ण के साथ-साथ डा. ओपी अग्निहोत्री व राजबली ने अपने विचार रखे। प्रसं

अमर उजाला
लखनऊ | शनिवार | 13 सितंबर 2014

'भूमि सुधार से बदली आर्थिक स्थिति'

लखनऊ। प्रदेश के लघु एवं सीमांत किसानों की दशा सुधारने के लिए जरूरी है कि उन्हें ऐसी तकनीक मुहैया कराई जाए जिससे कम क्षेत्र में अधिक उत्पादन हो सके। ये बातें उप्र कृषि अनुसंधान परिषद (उपकार) के महानिदेशक प्रो. राजेंद्र कुमार ने कहीं। वे शुक्रवार को उप्र भूमि सुधार निगम की ओर से विश्व बैंक पोषित सोडिक-तृतीय परियोजना के अंतर्गत 'टिकाऊ खेती' विषय पर इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में आयोजित कार्यशाला को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि प्रदेश की वर्षों से खराब पड़ी भूमि को सुधारने में भूमि सुधार निगम ने महत्वपूर्ण योगदान किया है। सुधारी गई भूमि में धान, गेहूं और दलहनी फसलों का उत्पादन हो रहा है और किसानों की आर्थिक स्थिति में परिवर्तन आया है। कार्यशाला में भूमि सुधार निगम की प्रबंध निदेशक आराधना शुक्ला का संदेश पढ़कर सुनाया गया।